श्री बाहुबली विधान (हिन्दी-संस्कृत)

माण्डला

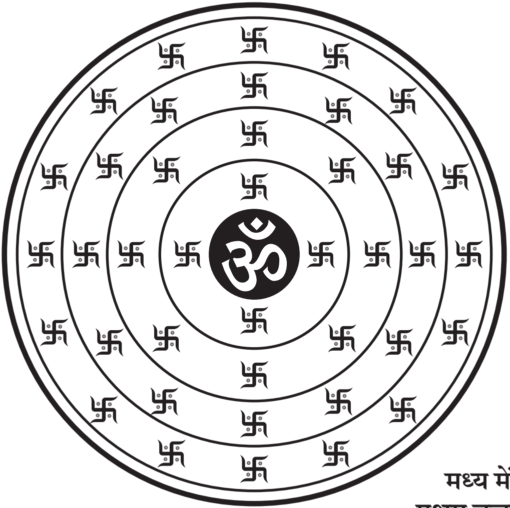

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय – 4
द्वितीय वलय – 8
तृतिय वलय – 12
चतुर्थ वलय – 16
कुल – 40 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति : श्री बाहुबली विधान (संस्कृत)
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम 2023, प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
संयोजन : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुर्ण्याजक :

अनिल कुमार, दीपक जैन

आराध्य जैन, सार्थक जैन

खतौली (मु. नगर)

श्री बाहुबली विधान स्तवन

दोहा- विजय प्राप्त कर युद्ध में, धारे परम विराग।
बुझा दिए निज ज्ञान से, प्रभू राग की आग।।

(ताटंक-छन्द)

भारत देश अयोध्या नगरी, के स्वामी थे आदि जिनेश।
नन्दा और सुनन्दा जिनकी, रही रानियाँ शुभम् विशेष।।
भरत बाहुबलि क्रमशः दोनों, के सुत चक्री काम कुमार।
श्रेष्ठ पदों को पाने वाले, हुए जगत में विस्मयकार।।1।।
माया मान के पीछे दोनों, मोहित होके लड़े थे युद्ध।
चक्री भरत कहे बाहुबलि, कामदेव पद पाए प्रसिद्ध।।
किया पराजित बाहुबली ने, फिर जाना संसार असार।
संयम धारण किए आपने, छोड़ के धन धरती परिवार।।2।।
वृषभाचल पर नाम लिखाने, जाते हैं जब नृप भरतेश।
जगह नहीं थी कहीं भी खाली, मन में कुण्ठित हुए विशेष।।
बाहुबली जी सोच रहे थे, भरत की भू सारी अवशेष।
वसुधा हुई न काहू की यह, दिए भरत जी शुभ सन्देश।।3।।
बाहुबली मन का विकल्प तज, किए स्वयं एकाकी ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रगटाये तव केवल ज्ञान।।
मुक्ती पथ के राही बनकर, पाए प्रभु जी पद निर्वाण।
'विशद' भाव से करते हैं हम, बाहुबली जिनका गुणगान।।4।।

दोहा- कल्पतरु सम आपकी, अर्चा रही महान।
ध्याते हैं जो भाव से, पाते वे निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री बाहुबली पूजन

एक वर्ष अनशन किए, खड्गासन भगवान।
बहुबली जिनराज का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी-छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने आए, अब क्षुधा नशाने आए।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम बाहुबली को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
हम बाहुबली को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांति अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पाजलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

बाहुबली भगवान को, ध्याएँ बालाबाल।
भाव सहित जिनकी विशद, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द–तामरस)

जय जय जय वृषभेष नमस्ते, आदिनाथ तीर्थेश नमस्ते।
प्रथम पुत्र भरतेश नमस्ते, हुए प्रथम चक्रेश नमस्ते।।1।।
जय जय जय अर्हन्त नमस्ते, बाहुबली भगवन्त नमस्ते।
हुए विरागी संत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।।2।।
पाए पद युवराज नमस्ते, पोदनपुर सरताज नमस्ते।
कामदेव पदवान नमस्ते, हुए आप गुणवान नमस्ते।।3।।
नेत्र मल्ल जल युद्ध नमस्ते, विजयी आप विशुद्ध नमस्ते।
जीत के त्यागी राज्य नमस्ते, तज अनुपम स्वराज्य नमस्ते।।4।।
पाए प्रभु वैराग्य नमस्ते, जगे सभी के भाग्य नमस्ते।
हुए आप निर्गन्थ नमस्ते, तजे पूर्ण सग्रन्थ नमस्ते।।5।।
एक वर्ष का ध्यान नमस्ते, हो खड्गासन वान नमस्ते।
करके पाए ज्ञान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।6।।
तीर्थंकर से पूर्व नमस्ते, पाए मोक्ष अपूर्व नमस्ते।
अष्ट मूलगुण वान नमस्ते, हुए सिद्ध भगवान नमस्ते।।7।।
अतिशय महिमावान नमस्ते, जग में हुए महान नमस्ते।
ध्याएँ जग के जीव नमस्ते, पाएँ पुण्य अतीव नमस्ते।।8।।

शिव पद के सोपान नमस्ते, पा रत्नत्रय वान नमस्ते।
करें सर्व कल्याण नमस्ते, पावें पद निर्वाण नमस्ते।।9।।

दोहा- तीर्थंकर के पुत्र हैं, चक्रवर्ति के भ्रात।
कामदेव कहलाए जो, हुए जगत विख्यात।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर के पुत्र हैं, चक्रवर्ति के भ्रात।
कामदेव कहलाए जो, हुए जगत विख्यात।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अर्घ्यावली

दोहा- अनन्त चतुष्ट्य प्राप्त कर, पाए केवलज्ञान।
पुष्पांजलिं करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय

(अनन्त चतुष्टय)

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किए प्रभु केवलज्ञान।
विशद भाव से बाहुबली जिन, का हम करते हैं गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुणप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, प्रगटाए प्रभु केवलदर्श।
बाहुबली जी आत्म ध्यान कर, प्राप्त किए हैं शुभ अपवर्ग।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मोह कर्म को नाश किए प्रभु, सुखानन्त पाए अभिराम।
बाहुबली के श्री चरणों में, करते बारम्बार प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुणप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अन्तराय का नाश किए प्रभु, वीर्यानन्त पाए शुभकार।
बाहुबली जिनवर की बोलें, विशद भाव से जय जयकार।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुणप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अनन्त चतुष्टय पाए महान।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, प्राप्त किए प्रभु पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय गुणप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

द्वितीय वलय

दोहा- प्रातिहार्य पाए प्रभू, बाहुबली भगवान।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अष्टप्रातिहार्य

तरु अशोक से शोक निवारण, होता है प्रभु के दरवार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि होती है नभ में, अतिशयकारी अपरम्पार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुराएँ सुर गण, प्रभु के आगे बारम्बार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।3।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त भवों का दिग्दर्शक हैं, भामण्डल प्रभु के पिछ्वार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।4।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभि की ध्वनि सुन्दर, समवशरण में हो मनहार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।5।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के स्वामी हैं प्रभु, छत्र त्रय दर्शाएँ अपार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।6।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की, ॐकार ध्वनि में शुभकार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।7।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन प्रभु का, प्रातिहार्य है मंगलकार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।8।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य प्रगटित होते वसु, प्रभु के आगे अतिशयकार।
केवल ज्ञान जगायें अनुपम, इन्द्र करें तब जय जयकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यसहिताय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा- द्वादश तप धारें प्रभू, बाहुबली भगवान।
पुष्पांजलि करते चरण, पाने पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

द्वादश तप

(ताटक छन्द)

अनशन तप को पाने वाले, चारों विधि त्यागें आहार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऊनोदर तप करने वाले, इच्छा से कम लें आहार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत परिसंख्यान सुतप के धारी, नियम धारते विविध प्रकार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस त्याग सुतप को धरके, करें विविध जो रस परिहार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्त शैयासन तप के धारी, शैया में नित समता धार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयासन तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय क्लेश सुतप को पाके, क्लेश सहें जो अपरम्पार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाताज्ञात भूल हो कोई, प्रायश्चित द्वारा करें निदान।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय सुतप को पाने वाले, यथायोग्य करते सम्मान।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्ती तप के धारी, स्वपर रोग का करें निदान।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाध्याय तप करने वाले, विशद जगाएँ भेद विज्ञान।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्ग तप के धारी जग में, होते अतिशय महिमावान।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान सुतप के धारी अनुपम, करने वाले निज कल्याण।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को पाने वाले, द्वादश तप धारें अनगार।
सम्यक् तप के धारी की हम, पूजा करते बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा– सोलहकारण भावना, शिवपद के सोपान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करने को गुणगान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सोलहकारण भावना

(चाल–छन्द)

दर्शन विशुद्धि सुखदायी, शिवपद में कारण भाई।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर विनय भाव के धारी, होते जग मंगलकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, बनते हैं शिवपद भोगी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।3।।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
व्रत शील अनतिचार धारें, वे संयम रत्न सम्हारें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।4।।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संवेग भाव जो पाते, भव से विरक्त हो जाते।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।5।।
ॐ ह्रीं संवेग भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो त्याग शक्तिसः करते, वे मुक्ति वधू को वरते
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।6।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो सुतप शक्तिसः धारें, वे कर्म शत्रु को जारें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।7।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं साधु समाधि के धारी, जिन आतम ब्रह्म विहारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।8।।
ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते जो वैय्यावृत्ती, उनकी है अलग प्रवृत्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।9।।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो अर्हद् भक्ती, भव से पाते वे मुक्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य भक्ति सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ती धर ज्ञानी, होते जग में कल्याणी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन भक्ती के धारी, होते जिन धर्म प्रचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आवश्यक अपरिहारी, बनते हैं शिवमगचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मार्ग प्रभावक भाई, शिव नारि वरें सुखदायी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।15।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वत्सल जो पावें, वे केवलज्ञान जगावें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सल भावनायै: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोलह कारण भावना, भायें हम हे नाथ!।
शिवपथ के राही बनें, चरण झुकाते माथ।।17।।

ॐ ह्रीं षोडशकारण भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- क्षायिक नव लब्धी प्रभू, पाके हुए निहाल।
बाहुबली भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(तर्ज-वीर प्रभु के चरण...)

बहुबली के चरण कमल द्वय, लगते प्यारे-प्यारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।टेक।।
खुशियों का सागर लहराता, जब दर्शन मिल जाते हैं।
हृदय सरोवर के मुरझाए, विशद पुष्प खिल जाते हैं।।
अन्धकार में बाहुबली जी, दिखते चाँद सितारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।1।।
वीतराग मुद्रा के दर्शन, से सद्दर्शन हो जाए।
जिनके चरण आचरण पाए, कर्म कालिमा खो जाए।।
भक्तों द्वारा जिनके चरणों, लगते जय-जयकारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।2।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, केवल ज्ञान जगाएँ हैं।
कर्म घातियाँ नाश किए फिर, नव लब्धी प्रगटाए हैं।।

बाहुबली जयवन्त रहें जो, जग के तारण हारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।3।।
मोक्षमार्ग पर बढ़कर तुमने, जग को शिवपथ दिखलाया।
संयम, त्याग, तपस्या का शुभ, पाठ आपने सिखलाया।।
कर्मशत्रु तव अटल साधना, के आगे सब हारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।4।।
चरण शरण के भक्त बने हम, आज यहाँ पर आए हैं।
तीन लोक में पूज्य आपकी, पूजा यहाँ रचाए हैं।।
भव्य भक्त हे नाथ! आपने, हम जैसे कई तारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।5।।
पुण्य योग से दर्श आपका, जीवों को मिल पाता है।
'विशद' आपका दर्शन करके, स्वयं भाग्य जग जाता है।।
धन्य हुए वे भक्त जिन्होंने, सिर पर कलशा ढारे हैं।
जिनके दर्शन सारे जग से, हमको लगते न्यारे हैं।।6।।

दोहा- बाहुबली भगवान की, महिमा का ना पार।
वृहस्पति भी ना कह सके, माने वह भी हार।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-बाहुबली का बाहुबल, गाया अपरम्पार।
जिनकी अर्चा कर 'विशद', जीव होंय भव पार।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री बाहुबली स्तवन (संस्कृत)

बाहुबल युक्ताय च, बाहूबली जिनेश्वरं।
स्थाप्य मस्तके बाहू, जिन पादाम्बुजे नमः।।

(बसंततिलका छन्द)

विघ्नौघजित् मरकताभ ! समंततस्-त्वां।
संवेष्ट्य भीषणफणा विषदर्पजुष्टाः।।
वल्मीक-रन्ध्रगत निर्गत कृष्णनागाः।
दीर्घं त्वदीय पृथुदेह गिरावदीव्यन्।।1।।
योगात्प्रसन्न हृदये त्वयि संस्मितास्यः।
वल्याभि वेष्टित तनुः पृथु कल्पवृक्षः।।
लोकोत्तराभ्युदय सौख्य फलं ददासि।
त्वामद्भुतद्रुमत एव जनाः श्रयंति।।2।।
नाथ ! त्वदंघ्रि युग संतत सेव्यमानाः।
ज्योतिर्गणा अगणिता रविचंद्रमुख्याः।।
दीप्तिस्-त्वसंख्य सुरवृंद-मतीत्य तेऽस्ति।
तुल्या भवंति किमु ते तवदीप्ति कान्त्या।।3।।
वक्त्रं त्वदीय धवलोज्ज्वल कीर्ति कांतं।
रम्यं विकार भय शोक विषाद दूरं।।
स्मेरं सुसौम्य-मतुलं सुभगं प्रशांतं।
हर्षोत्करैर्-जनमनांसि हरत्-यजस्रं।।4।।

लोके चमत्कृतिकरं तव नाम मंत्रं।
जल्पज्जना अनुपमां श्रियमाप्नुवंति।।
चित्रं तदेव यदि नाम समीहितार्थाः।
नो यांतु वश्य-मिह जन्मनि जन्मभाजां।।5।।
जन्मान्तरार्जित निधत्त निकाचिताद्याः।
बंधाश्च घोरतर-तापकरा वृथैव।।
कुर्वंति ते कटुक दुःखा-मसत्यनिंदां।
निघ्नंति शास्त्रमिव नाथ ! विपाककाले।।6।।
त्वद्बिम्ब निर्मल-मुखाम्बुज वीक्षणेन।
पुण्यांकुरोत्-पुलक कंचुकितांग भाजः।।
नाशं प्रयांति लघु तेऽपि हि संशयः कः।
सिद्धांतसूत्रकथितं कथमन्यथा स्यात्।।7।।
त्वन्नाम-पूतरसना लघु दिव्यवाणीं।
हृद्यां त्रिलोक जन वश्यकरीं विधत्ते।।
स्तोत्राय ते रुचिर वर्ण-पदा मनोज्ञाः।
तस्याः कथं कतिपया न वशीभवंति।।8।।

(अनुष्टुप-छन्द)

अवसर्पिणी तृतियं, काले मोक्ष गते गतः।
त्रय योगे नमस्कृत्य, विशदेऽपि गुणार्णवं।।9।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री बाहुबली पूजा

स्थापना (बसन्ततिलका-छन्द)

शाल्यांकुराभ तनु बाहुबलीश! योगे,
लीनं लताभि-रहभिः परितः सुजुष्टं।
त्वां वीक्ष्य खेचर रमा बहु विस्मयेन,
भक्त्या निवारण परामुहु-रेव नौमि।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अनुष्टुप छन्द)

करोम्यर्चनं भक्त्या, वारिभिश्चित्त हारिभि।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, चन्दनैश्चित्त नन्दनै।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, तण्डुलै रतिनिर्मलैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, कुसमैर्विगतोपमैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, पक्वानैः सरसैर्नवैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, दीप व्रातैः प्रमार्चितैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, धूप धूम्रैर्-मनोरमैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, फलैः पूजादि सत्फलै।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं भक्त्या, विशदार्घ्य समन्वितैः।
बाहुबली जिनेन्द्राणां, स्व-स्वरूपोप-लब्धये।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सत् संयम पयः पूर, पवित्रित जगत् त्रयम्।
बाहुबलीं नमस्यामि, विश्व-विघ्नोघ शान्तये।।

(बसन्ततिलका-छन्द)

हे कामदेव! शुभवर्ण हरित सुगात्र!,
केनोपमां तव करोमि समोपिकश्चेत्।
नूनं भवान् खलु भवादृश एव लोके,
तृप्यन्ति नो जन दृशो मुहु-रीक्षमाणः।।1।।
आजन्म जात बहु बैर विकारभावाः
सिंह प्रभृत्यखिल जंतुगणा अपीत्थं।
ध्यान प्रभाव वशतस्तव हिंस्र भावं,
त्यक्त्वा मिथः परमशांत-मुपाशत त्वां।।2।।
उत्तुंग देह! भराताधिपजित्! तव प्राक्,
शिष्योवभूव भरतेश्वर चक्ररत्नं।
रत्नत्रयं पुन-रवाप्य सुसिद्धि चक्रं,
मोहैकजित्-त्रिभुवनैक गुरुर्वभूव।।3।।
सुज्ञान वीर्य सुख दर्शननान्त्य रूप!
कैवल्य लोचन! विराग! हितानुशास्तः।
हे सिद्धकांत! जिन! बाहुबलीश! देव!,
श्री गोमटेश! तव पाद युगं प्रवंदे।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवनाम्भोज मार्तण्डं, धर्मामृत पयोधरम।
योगि कल्पतरुं नौमिं, देव-देवं वृष तनुम्।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अर्घ्यावली – (प्रथमं वलयः)

जय घाति विनिर्मुक्तं, जयाऽसक्त शिव श्रियम्।
जय सद्दर्शन ज्ञान, सुख वीर्य युत प्रभो!।।

।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

अनन्त चतुष्टय

(इन्द्रवज्रा–छन्द)

ज्ञानावरण दुष्कर्म प्रणस्स, 'केवल्य ज्ञानं' प्रगटी करोति।
संसार क्षारोदधि–मुत्तरन्तो, मुक्तस्तु ते पार मुपाश्रयन्ति।।1।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धत्तेतदाऽनिर्वचनीय रूप–मानंद कन्दं सुर दुर्लभं यत्।
दर्शनावरण कर्म तेषां दह्यं, 'केवल्य दर्शन' मुदेति शुद्धम्।।2।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अर्हत् विकारापगता सुदेहा, सन्निर्मलाः रूप रसादि हीनाः।
मोहं दशां ता–मविनाशनीं ते, प्राप्तश्–'चिदानंद सुखं' लभन्ते।।3।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्मान्तारायं तदा प्रणाशाय, 'अनंतवीर्यं' सु गुणान् भजन्ति।
संसार क्षारोदधिमुत्तरन्तो, मुक्त–स्तुते पार मुपाश्रयन्ति।।4।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(अनुष्टुप छन्द)

अनन्त दर्शन ज्ञाने, ऽनन्त वीर्य सुखस्पदं।
चतुष्टयं परिप्राप्त, नत्वा बाहूबली जिनं।।5।।

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टय प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

नमो बाहूबली देव!, देवं सुतप धारणम्।
प्रातिहार्य सुयुक्तं च, पद पद्मं नमाम्यहं।।

।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

अष्टप्रातिहार्य (इन्द्रवज्रा-छन्द)

'अशोक वृक्षो' जनशोक हारी, वियोग रोगार्ति विनाशकारी।
सुवीज्यमानाश्-चमरीरुहाश्च, भांतीव ते निर्झर वारिधाराः।।1।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वारेषु देवाः किलरक्षकाः स्युः, सद्दृष्टिमद्भिः सह रज्यमानाः।
मध्ये त्रिसालस्य हि गंधकुट्यां, 'सिंहासनस्योपरि' देव देवः।।2।।

ॐ ह्रीं तरु सिंहासन प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विराजते रत्नमणि प्ररोचिः, कंजासने या चतुरंगुलास्प्रक्।
'छत्रत्रयं' चंद्रनिभं प्रवक्ति, 'त्रैलोक्यनाथोऽय' मति स्तुवे तं।।3।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भामण्डल' सप्तभवान् सुभव्याः, वापी जलेऽपि प्रविलोकयंति।
सर्वाः सुसंपत् निधियोऽपि विश्वे, रत्नानि सर्वाणि अभुश्च तत्र।।4।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाश्चक्र-कांतिः प्रभुदेह दीप्या, विडंबयत्कोटि-रविप्रभासौ।
'सर्वार्थ भाषामय' दिव्यवाक् ते, त्रिकालमाविर्भवति स्तुवे त्वां।।5।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवा व्यधुर्-'दुंदुभिनाद'-मुच्चैः, त्रैलोक्यजंतुं प्रति सूचयंतं।
जयारवं कल्पतरोश्च वृष्टिं, गंधोदकैश्च प्रणमाम्यहं तं।।6।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रियः प्रियः संगत विश्व रूपः, सुदर्शनच्छिन्न परावलेपः।
'सुपुष्पवृष्टि' क्रियतेऽपरेन्द्रो, रमां ममाद्य परमां जिनेन्द्रः।।7।।

ॐ ह्रीं सुपुष्पवृष्टि प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेशपाणि ललितांकुराणि, तुर्याधिषष्ठिः गणनानि देवाः।
वीचि प्रमाणि द्विपार्श्व यस्ते, 'सच्चामराणि' च य निर्दलन्तु।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि चंवर प्रातिहार्य प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप-छन्द)

कल्याणातिशयोपेतं, प्रातिहार्य समन्वितं।
सुरेन्द्र वृन्द वन्द्यांघ्रि, जिनं नौमि जगद्गुरुम्।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य सम्पन्न श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

तृतिय वलयः

बाहुबली नमस्कृत्य, द्वादश तप संयुतम्।
विशदातिशयोपेतं, पूजनीयः पुनः पुनः।।

।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

द्वादश तप (अनुष्टुप-छन्द)

'चतुर्विधाऽहार त्यागो', जिन पूजा जपादिकं।
समताभावं क्रियते, तपाख्याता चाऽनशनं।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

धर्मावश्यक योगे च, ज्ञानादिक उपग्रहं।
न कुरु इंद्रिय दोषं, 'ऊनोदर तपः' कृते।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

क्षीर दधि सर्पि गुणं, तेल लवणं त्यक्तवान।
तिक्त कटु कषायं च, मधुराम्बिल वर्जनं।।3।।

ॐ ह्रीं रस त्याग तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोचरं प्रमाणं नाना, विधानं ग्रहणं तथा।
तस्य ऐषणा ग्रहणं, 'वृत्तिसंख्या' विधानताः ।।4 ।।

ॐ ह्रीं व्रत्ति परिसंख्यान तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शयनाशन स्थानं च, विविधैश्च अवग्रहै।
अनुवीचि परितापाः, 'काय क्लेशो' तपः तथा ।।5 ।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तिर्यंची मानुषीयं च, सविकारी देवी गृहे।
निलयेऽप्रमाण वर्ज्यं, 'शयनाशनं' स्थानकं ।।6 ।।

ॐ ह्रीं विविक्त शय्याशन तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो वचन कायैश्च, बभूवो दुष्कृतं विभो!।
तव प्रसादतो मिथ्या, भवन्ति दुष्कृतं मम् ।।7 ।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

शत्युचाशन पीठिं च, निवसन्ति तलाशने।
स्याद् 'विनय' तपश्चित्ते, भणन्ति जिन शासने ।।8 ।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दश विधाऽनगाराणां, दानं मानादरैभक्त्या।
हस्त पादादि संवाहन, 'वैय्यावृत्ति' भवन्ति च ।।9 ।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वाचना प्रच्छनाम्नाय, धर्मोपदेशानुप्रेक्षां।
'स्वाध्यानेनास्ति' सुध्यानं, ध्यानफल निर्वाणकं।।10।।
ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
ममत्वं परिवर्ज्यामि, निर्ममत्वे व्यवस्थाताम्।
आलम्बनं ममात्मनः, अवशेषानि-वोसरे।।11।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
मुक्तं सर्व विकल्पानि, तत्त्व चिन्तवनेऽशक्तः।
धर्म ध्याने रतो नित्यं, 'ध्यान तपो' जिनागमे।।12।।
ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
अनशनादि तपः बाह्यः, अभ्यंतरस्-तपस्तथा।
दुष्कर्म निर्जरा हेतुं, निर्जरात निर्वाण च।।13।।
ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

रत्नत्रय सुधर्मं च, विविध गुण शालिना।
बाहुबली पदं पूज्यं, पाद पद्मे पुष्पांजलिं।।
।। मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

दशलक्षणादियुत जिन (इंद्रवज्रा-छन्द)

सद्दर्शनं तज्जननार्ति मृत्युं, सर्वत्रयी दर्प हरं नमामि।
यद् भूषणं प्राप्य भवन्ति शिष्टा, मुक्ते विरूपा कृतयोऽप्यभीष्ट।।1।।
ॐ ह्रीं सम्यक दर्शन प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दत्तार्घ्य-मप्यात्म-हितैरनर्घ्यं, मुक्ति श्रियो मौक्तिक हारभूतम्।
'सज्ज्ञान' तं नौमि परं पवित्रं, तत्त्वेक पात्र दुरितच्छिदस्त्रयम्।।2।।
ॐ ह्रीं सम्यक ज्ञान प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
समस्त जन्तु स्वभयं पदार्थ, सम्पतकरी ज्ञान सुदत्तिरिष्टो।
धर्मौषधीशा अपि ते मुनीशास्, व्रतेश्वरा द्रान्तु मनोमलानि।।3।।
ॐ ह्रीं सम्यक चारित्र प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
या भव्यजीवान् भवि भावुकानां, संघ सवित्रीव सदा ब्रवीति।
दुर्जेय जन्तून् क्षणतो विजेतु-महं, 'क्षमां' ता-मह-मर्चयामि।।4।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
सर्वत्र सद्भाव विशोभमानं, मानच्युतौ जात-मिहाति मानसम्।
तं 'मार्दवं' मानव धर्ममार्य, प्रार्थ्यं प्रवेन्द्र शतधा प्रभक्त्या।।5।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सर्वत्र निश्छद्म दशासु बल्ली,
प्रतानमारोहति चित्तभूमौ।
तपो यमोऽद्भूत फलै-रबन्ध्या,
शाम्याम्बु सिक्ता तु नमोऽस्त्वार्जवम्।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
कस्यापि यत्रास्ति न काचि-दिच्छा, पावित्र्य संमन्दिर-मिन्द्र बन्द्यम्।
तं लोभ लोपे किल जातमात्म्यं, धर्मं सदा 'शौच'-महं नमामि।।7।।
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सत्येन मुक्तिः सत्येन भुक्तिः, स्वर्गेऽपि सत्येन पद प्रसक्तिः।
सत्यात्परं नास्ति यतः सुतत्वं, सत्यं ततोनौमि सदा सभक्तिः।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मनो वच : कायभिदानुमोदा, विभंगतश्चेन्द्रिय जन्तु रक्षा।
वर्वर्ति 'सत्संयम' बुद्धि धीरास्-तेषा सपर्याविधि-माचरामि।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तपो विभूषा हृदयं विभर्ति, येषां महाघोर 'तपो' गुणाग्र्याः।
इन्द्रादि धैर्य च्यवनं स्वतस्त्यं, तया युता एव शिवैषिणः स्युः।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

त्यागं बिना नैव भवेन्नु मुक्तिस्-त्यागदृते नास्ति हितस्य पन्थाः।
'त्यागो' हि लोकोत्तर मस्ति तत्तं, यस्मात्ततोऽहं किल तं नमामि।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आत्मस्वाभावा-दपरे पदार्थाः, न मेऽथवाऽहं न परस्य बुद्धिः।
येषामिति प्राणयति प्रमाणं, तेषां पदार्चा करवाणि नित्यम्।।12।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिन्चन्य धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंभोर्वशी यन्मनसो विकारं, कर्त्तुं न शक्ताऽऽत्म गुणानुभावान्।
शीलेशतामद धुरुत्तमार्थां, यजामि तानार्य वरान्मुनीन्द्रान्।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यः सर्वथैकान्त नयान्धकारं, प्रचार नस्यन्नय रश्मि जालैः।
विश्व प्रकाशं विदधाति नित्यं, पायादनेकांत रविः स युस्मान्।।14।।

ॐ ह्रीं अनेकांत स्वरूप श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

त्रिलोकं त्रिकालोद्भवं द्रव्यसर्व, अनन्तैर्गुणैः सर्व पर्याय युक्तः।
विजानाति रागच्युतो यः प्रशस्ता, कुर्यात् समंगल 'स्याद्वाद' रूपः।।15।।

ॐ ह्रीं स्याद्वाद स्वरूप श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सद्दर्शन ब्रह्म मुहुर्त द्रश्यन, मनः प्रसादास्-तमसां लवित्रं।
भक्तु परं ब्रह्म भजन्तु शब्दर्, ब्रह्मंजसं नित्य मथात्मनीनाः।।16।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म स्वरूप श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय पवित्रं तु, दश धर्मं सुयुतेन् च।
स्याद्वादनेकान्त युक्तं, ब्रह्मलीन सुपूजितं।।17।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण प्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

(अनुष्टुप छन्द)

बाहुबली मुनि चाये, कायोत्सर्ग धरं परं।
वर्षोपवासिनं धीरं, पाप नाशन शुद्धिदं।।1।।

(बसंत तिलका)

भक्तिर्धुनी तव विभो! कलुषं धुनीते।
नाना विकल्पहत दुष्टमनः पुनाति।।

संसार धर्म भवताप - मपाकरोति।
रागाद् विदूरयति मोक्ष पदं ददाति।।2।।
किं जल्पितैर् बहु बिधैर् भुवि नास्ति किंचित्।
यन्नाम जातु नहिं वश्व मुपैति भक्त्या।।
दौषैर्युजोऽपि जिनदेव! तव प्रसादात्।
लोकेऽत्र देहभृत इष्टफला भवंति।।3।।
जन्मान्तरार्जित निधत्त निकाचि ताद्याः।
बंधाश्च घोरतर-तापकरा वृथैव।।
कुर्वंति ते कटुक दुःखमसत्-यनिंदां।
निहनंति शस्त्रमिव नाथ! विपाक काले।।4।।
व्याप्ति त्रिलोकसित कीर्ति सुमाधवीभिर्।
जुष्टं तनुं तृषित चक्षुभि-रीक्षमाणाः।।
त्वां ये त्रिलोकतिलक! प्रतिमत्यतीतं।
ध्यायंति तान् न सितकीर्ति-लताश्नुते किं।।5।।

(अनुष्टुप छन्द)

नमः बाहुबली देवं, सर्व दोष निवारकं।
'विशद' ध्यान युक्ताय, हत कर्माष्टकाय च।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप छन्द)

बहुबली नाभिजा पुत्रं, विशिष्ट तप धारिणा।
करोमि पूजनं तस्य, अष्ट द्रव्य युतं मनः।।

।। इत्याशीर्वादः ।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री बाहुबली चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के चरण में, करके प्रथम प्रणाम।
चौबीसों जिनराज के, ध्याते उर से नाम।।
बाहुबली भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े भाव से जो 'विशद', अनुपम आए बहार।।

(चौपाई)

जय-जय बाहुबली जिन स्वामी, नाथ! आप मुक्ती पथगामी।।1।।
तुमको यह सारा जग जाने, तीर्थंकर के जैसा माने।।2।।
पावन जम्बूद्वीप बताया, भारत देश उसी में गाया।।3।।
जिसमें नगर अयोध्या जानो, शाश्वत जन्म नगर पहचानो।।4।।
तृतिय काल रहा सुखदायी, आदिनाथ जन्मे तब भाई।।5।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, आप जहाँ में हुए निराले।।6।।
बाहुबली जिनके सुत भाई, मात सुनन्दा जिनने भाई।।7।।
पिता ने तुमको ज्ञान सिखाया, पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया।।8।।
बचपन बीता आई जवानी, तुमने महिमा जग की जानी।।9।।
सवा पाँच सौ धनुष की भाई, श्रेष्ठ रही तन की ऊँचाई।।10।।
पिता को जब वैराग्य समाया, पुत्रों को तब पास बुलाया।।11।।
नगर अयोध्या श्रेष्ठ कहाए, भरत को उसका राज्य दिलाए।।12।।

बाहुबली राजा कहलाए, पोदनपुर की सत्ता पाए।।13।।
भरतेश चक्ररत्न प्रगटाए, छह खण्डों पर विजय दिलाए।।14।।
चक्र हाथ न आया भाई, विजय पूर्णता न हो पाई।।15।।
बाहुबली बाहूबल धारी, नहीं दासता जो स्वीकारी।।16।।
मंत्री ने भारी समझाया, लेकिन एक चली न माया।।17।।
बाहुबली ने बात न मानी, तब भरतेश ने युद्ध की ठानी।।18।।
नेत्र युद्ध जल मल्ल बताए, बाहुबली विजयश्री पाए।।19।।
यह संसार स्वार्थ मय गाया, बाहुबली के मन में आया।।20।।
मन में तब वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।21।।
भूमि भरत की है यह सारी, कहाँ जाएँगे हो अविकारी।।22।।
केश लुंचकर दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।23।।
तन पर बेल चढ़ी थी भाई, तन की सारी सुधि विसराई।।24।।
बिच्छू साँप आदि कई आए, तन पर अपना वास बनाए।।25।।
एक वर्ष का ध्यान लगाए, फिर भी केवल ज्ञान न पाए।।26।।
नहीं आप आहार को आए, ऐसी अद्भुत शक्ती पाए।।27।।
तब भरतेश चरण में आए, पद में सादर शीश झुकाए।।28।।
वसुधा किसी की न हो पाई, क्यों विकल्प करते हो भाई।।29।।
प्रभु ने निज का ध्यान लगाया, तब फिर केवलज्ञान जगाया।।30।।

आदिनाथ से पहले भाई, अष्टापद से मुक्ती पाई।।31।।
माँ चामुण्डराय की गाई, जिसने स्वप्न सजाया भाई।।32।।
विन्ध्य सुगिरि पर्वत शुभकारी, इसमें प्रतिमा हो मनहारी।।33।।
तब चामुण्डराय ने भाई, अनुपम शुभ मूर्ती बनवाई।।34।।
सत्तावन फुट ऊँची जानो, अतिशयकारी जो शुभ मानो।।35।।
जग में प्रतिमा रही निराली, सबके मन को हरने वाली।।36।।
होता है अभिषेक निराला, जन-जन का मन हरने वाला।।37।।
बारह वर्ष बाद मनहारी, हो अभिषेक श्रेष्ठ शुभकारी।।38।।
'विशद' भाव से हम भी ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।39।।
शिवपथ हमको प्रभू दिखाओ, अपने जैसा हमें बनाओ।।40।।

दोहा- बाहुबली सम बाहुबल, पाएँ हे भगवान!।
मुक्ती पद के भाव से, 'विशद' करें हम ध्यान।।
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, बनें श्री के नाथ!।।

जाप :

ॐ ह्रीं बाहुबलधारी श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः।

श्री बाहुबली जी की आरती

तर्ज–भक्ति बेकरार है....

बाहुबली दरबार है, अतिशय बड़ा विशाल हैं।
भक्त यहाँ पर भक्ती करके, होते मालामाल हैं।।टेक।।
तीर्थंकर के पुत्रा कहाए, कामदेव पद पाया जी–2।
चक्रवर्ती से भूप भरत को, रण में शीघ्र हराया जी–2।।
बाहुबली..।।1।।
जागा जब वैराग्य हृदय में, वन को आप सिधाए जी–2।
एक वर्ष तक खड़े रहे प्रभु, अतिशय ध्यान लगाया जी–2।।
बाहुबली...।।2।।
प्रभु के तन पर जीव जन्तुओं, ने स्थान बनाया जी–2
हाथ पैर में बेले लिपटी, निज में निज को पाया जी–2।।
बाहुबली...।।3।।
तीर्थंकर से पहले ही प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए–2।
भव सागर से पार हुए तुम, शिवपुर नगरी वास किए–2।।
बाहुबली...।।4।।
आरति करके प्रभु चरणों में, 'विशद' भावना भाते जी–2।
ज्ञान ध्यान हो लक्ष्य हमारा, सादर शीश झुकाते जी–2।।
बाहुबली...।।5।।

अथ बाहुबल्यष्टकम्

(पं. श्रीपन्नालालसाहित्याचार्यरचितम्)

वंशस्थ

विजित्याग्रजं यो रणे स्वात्मवीर्याद्।
विरक्तो वभूव क्षितौ प्राप्तराज्यात्।।
तपस्यानिलीनं विलीनांह सं वै।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।1।।
तपस्यां चरन् यो महाशीतवातं।
खरांशुप्रतापं महाम्भोदवृष्टिम्।।
प्रसेहे स्थिरं स्वात्मचिन्तायुतम् वै।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।2।।
गृहीत्वा तपो येन भुक्तं न जातु।
जलं नैव पीतं पिपासातुरेण।।
विवृद्धो व्यधायि स्वकीयो गुणौघः।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।3।।
यदीये सुदेहे गिरीन्द्रेण तुल्ये।
घनाः श्यामलाभाः सुलग्ना बभूवुः।
सदा ध्यानमग्नं महामोक्षलग्नं।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।4।।

यदीपांगलग्नं लतातन्तुजातम्।
अकुर्वन् विदूरं सुरीखेचराद्याः।।
युतं पत्रिवृन्दैः कुलायस्थितै र्वैं।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।5।।
निमग्नं सदा स्वात्मसंचेतनायां।
विलग्नं सदा मुक्तिकान्तानुबन्धे।।
दहन्तं सदा कर्मदावं महान्तं।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।6।।
सुराः खेचराश्चानमन्ति स्म नित्यं।
स्थितं ध्यानमध्ये गिरीन्द्रोपमानम्।।
महोबोधकैवल्यलक्ष्म्या लसन्तं।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।7।।
विधूयाष्टकं यो विधीनां विदुष्टं।
वभूवापवर्गेश्वरः क्षिप्रमेव।।
नुतं देववृन्दैः स्तुतं साधुसंघैः।
सुनन्दासुतं तं सदाऽहं नमामि।।8।।
बाहुबल्यष्टकं नित्यं पठेद् यः शुद्धचेतसा।
सोऽनन्तबलमाप्नोति नियमेन निरन्तरम्।।9।।

।। इति बाहुबल्यष्टकं सम्पूर्ण ।।